ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /21

अयोध्या के परिप्रेक्ष्य में "श्री सम्प्रदाय"

– *शालिनी मिश्रा एवं ** डॉ. ऋचा पाठक
*शोध छात्रा–प्राचीन इतिहास एवं **शोध पर्यवेक्षक
का. सु. साकेत स्ना0 महाविद्यालय, अयोध्या
डॉ.राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,अयोध्या

मुख्य शब्द– सम्प्रदाय, विशिष्टाद्वैत दर्शन,रामानुजाचार्य, अध्यात्मज्ञान, आद्य प्रवर्तिका, द्रविड़ शैली।

सम्प्रदाय

हिन्दू धर्म में चार मुख्य सम्प्रदाय है–वैष्णव (जो विष्णु को परमेश्वर मानते है) **,शैव** (जो शिव को परमेश्वर मानते है)**,शाक्त**[1] (जो देवी को परमशक्ति मानते है) और **स्मार्त**[2] (जो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं)। परंपरा से चला आया हुआ सिद्धान्त या मत सम्प्रदाय को एक परंपरा ''आध्यात्मिक वंश या ''धार्मिक क्रम'' के रूप में समझा जा सकता है। सम्प्रदाय के अन्तर्गत गुरू–शिष्य परम्परा चलती है, जो गुरू द्वारा स्थापित परम्परा की पुष्टि करती है। सम्प्रदाय कोई भी हो सबकी खोज उस परम सत्य की है, बस रास्ते अलग और उसे मनाने का ढंग अलग हैं। सम्प्रदाय शिष्यों के एक उत्तराधिकार से सम्बन्धित है जो एक ऐसी परम्परा स्थापित करता है जो ''सम्प्रदाय'' को स्थिरता प्रदान करती है। इसके विपरीत एक विशेष गुरू वंश को परम्परा कहा जाता है और एक वर्तमान गुरू के परम्परा में एक दीक्षा प्राप्त करके व्यक्ति अपने उचित सम्प्रदाय के अन्तर्गत आता है। सभी हिन्दू सम्प्रदाय की ये खूबी है कि कोई भी दूसरे सम्प्रदाय के खिलाफ नहीं होता और सभी एक दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करते और एक दूसरे की अच्छाइयों को अपनाते है। एकस्विता स्थापन के प्रयास मे यदा–कदा पारस्परिक मतभेद परिलक्षित होता है।

श्री सम्प्रदाय क्या है ?

श्री सम्प्रदाय पूर्णतया वैदिक है, क्योंकि इनकी परम्परा एवं सिद्धांत श्री लक्ष्मी नाथ से प्रारम्भ होकर श्री लक्ष्मीजी, श्री विष्वक्सेनसूरि, श्री शठकोपसूरि, श्री नाथमुनि स्वामी जी, श्री यमुनाचार्य स्वामीजी, श्री रामानुजाचार्य जी, श्री वरमुनिस्वामी जी इत्यादि की अटूट परम्परा श्रृंख्लाबद्ध होकर हमारे श्री गुरू महाराज तक पहुँची है। यह परम्परा अविच्छिन्न होकर श्री गुरू महाराज की कृपा से हम में समाहित हुई। हिन्दू धर्म के अन्दर वैष्णव सम्प्रदाय के चार सम्प्रदायों में से एक श्री सम्प्रदाय है। यह शास्त्रीय मत है कि इसकी उत्पत्ति लक्ष्मीनाथ एवं श्री लक्ष्मीजी की इच्छा से हुई है। श्री विष्णुजी श्रीनिवास है, इससे ज्ञात होता है कि महालक्ष्मी और श्री विष्णु एक ही है। इस दिव्य परम्परा में दिव्य सोच का विशिष्ट ऐतिहासिक महत्व है। स्वामी रामानुजाचार्य श्री मन्नारायण से लेकर संसार के मानवों के बीच माला के सुमेर स्थान में विद्यमान है। **लक्ष्मीनाथसमारम्भां नाथयामुनमध्यमाम् ।अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरूपरम्पराम्।।**[3] श्रीसम्प्रदाय ही सबसे पुरातन है। इसके अनुयायी '' श्री वैष्णव '' कहलाते हैं। इन अनुयायियों की मान्यता है कि भगवान नारायण ने अपनी शक्ति श्री (लक्ष्मी) को अध्यात्मज्ञान प्रदान किया। तदुपरान्त लक्ष्मी ने वही अध्यात्म–ज्ञान प्राप्त किया। तदुपरान्त लक्ष्मी ने वही अध्यात्मज्ञान विष्वक्सेन को एवं विष्वक्सेन ने नम्मालवार को दिया। अयोध्या के परिप्रेक्ष्य में विद्यमान सप्तहरि की अवधारणा वैष्णव सम्प्रदाय को सम्पुष्ट करती है।

श्री सम्प्रदाय (रामानुज सम्प्रदाय) के प्रवर्तक

श्री सम्प्रदाय, जिसकी आद्य प्रवर्तिका विष्णुपत्नी महालक्ष्मी और प्रमुख आचार्य रामानुजाचार्य हुए जो वर्तमान में रामानुज सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है। श्री सम्प्रदाय अतिप्राचीन सम्प्रदाय है, अब इस सम्प्रदाय को इसके प्रमुख आचार्य के नाम से जाना जाता है। ''रामानुज सम्प्रदाय'' वर्तमान में वैष्णव सम्प्रदाय के चारो सम्प्रदाय ('श्री सम्प्रदाय',ब्रह्म सम्प्रदाय, रूद्र सम्प्रदाय एवं कुमार सम्प्रदाय) ये सभी संप्रदाय अपने प्रमुख आचार्यो के नाम से जाने जाते हैं। श्री रामानुजाचार्य का जन्म दक्षिण भारत के तिरूकुदूर क्षेत्र में हुआ था, बचपन में उन्होने कांची मे यादव प्रकाश गुरू से वेदो की शिक्षा ग्रहण की। रामानुजाचार्य आलवंदार यामुनाचार्य के प्रधान शिष्य थे। गुरू की इच्छानुसार रामानुज ने उनसे तीन काम करने का संकल्प लिया था–ब्रह्मसूत्र, विष्णु सहस्रनाम् और दिव्य प्रबंधनम् की टीका लिखना। उन्होनें गृहस्थ आश्रम त्याग कर श्रीरंगम के यदिराज संन्यासी से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। तदान्तर वह मैसूर के श्रीरंगम से चलकर रामानुज शालग्राम नामक स्थान पर रहने लगे। इन्होंने उस क्षेत्र में 12 वर्ष तक निरन्तर वैष्णव धर्म का प्रचार किया। फिर उन्होने वैष्णव धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए देश का भ्रमण भी किया। इसी आचार्य परम्परा से कालांतर में रामानुज ने वह अध्यात्मज्ञान प्राप्त किया। श्री रामानुज ने ''श्री वैष्णव '' मत को प्रतिष्ठापित कर इसका प्रचार–प्रसार किया एवं 1137ई. में वे ब्रह्मलीन हो गए।[4]

रामानुजाचार्य का परिचय

रामानुज एक भारतीय हिन्दू दार्शनिक गुरू और समाज सुधारक थे। उन्हे हिन्दू धर्म के भीतर श्री वैष्णववाद परंपरा के सबसे महत्वपूर्ण प्रतिपादकों में से एक माना जाता है। भक्तिमत के लिए उनकी दार्शनिक नींव भक्ति आंदोलन के लिए प्रभावशाली थी।[5]

- रामानुजाचार्य कर जन्म 1017ई. में तमिलनाडु के श्रीपेरूम्बुदूद गॉव में हूआ था। रामानुज को श्रीरामानुजाचार्य (भिक्षुओं के राजा यजीराज), भाष्यकार (तेलुगु में भाष्यकारूल) ,गोदगराजर थिरूप्पवाई जोयर, एम्बरूमनार मुनि और **लक्ष्मण के नाम से भी जाना जाता है**[6] , इन्हें 'इलाया' पेरूमल के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है–'प्रकाशमान', जो यमुनाचार्य जी के शिष्य थे।
- रामानुजाचाय के वैष्णव दर्शन का सबसे सम्मानित आचार्य माना जाता है, जो वेदांत दर्शन परम्परा में 'विशिष्टाद्वैत' के प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध है। रामानुज सगुण ईश्वर के उपासक थे, उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से प्राचीन भागवत (वैष्णव) धर्म की परंपरा को आगे बढ़ाकर उसे दार्शनिक आधार पीठिका पर स्थापित किया।
- रामानुजाचाय ने ब्रह्मसूत्र की रचना की तथा भगवद्गीता पर भाष्य लिखा। इनकी सभी रचनाएँ संस्कृत भाषा में है।
- रामानुजाचार्य ने अस्पृश्यों के साथ भेदभाव न करने की बात करते हुए कहा था कि विश्व रचयिता ने कभी किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया है। इन्होने जन्म या जाति के स्थान पर व्यक्ति के आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर सम्मान की बात की तथा वेदों के गोपनीय और सर्वोत्कृष्ट ज्ञान को मंदिर से निकाल कर आमजन तक पहुँचाया।
- रामानुजाचाय के भक्तिवादी दार्शनिक तत्वों का भक्ति आंदोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा। ऐसा माना जाता है कि 120 वर्ष की आयु में 1137 ई. में तमिलनाडु के श्रीरंगम पर इनका निधन हो गया।

मूल ग्रन्थः ब्रह्मसूत्र पर भाष्य 'श्रीभाष्य' एवं 'वेदार्थ संग्रह'।

रामानुजाचार्य जी का कथनः रामानुज के अनुसार हमारे वास्तविक स्वरूप को जानना और ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को जानना सबसे बड़ा अच्छा मार्ग है मोक्ष,या आध्यात्मिक मुक्ति को ब्रह्म (जीवन–मृत्यु–पुर्नजन्म चक्र से मुक्ति के वजाय) पर चिंतन करने के आनन्द के रूप में देखा जाता है[7] यह आनन्द ,भक्ति, स्तुति, पूजा और दिव्य पूर्णता पर चिंतन का परिणाम है। मुख्य रूप से ब्रह्मण के चरित्र के कारण रामानुज के लिए ब्रह्म का ज्ञान मुक्ति में निहित है[8]। रामानुज का कथन हैः ''ब्राह्मण के अलावा अन्य संस्थाएं आनन्द की प्रकृति के ऐसे संज्ञान की वस्तु, मात्र एक सीमित सीमा तक और सीमित अवधि के लिए हो सकती है। ब्राह्मण ऐसा है कि, उसे जानना एक अनन्त और स्थायी आनन्द है। **''ब्राह्मण आनन्द है''**[9] अनुभूति का रूप आनन्द के रूप मे उसके उद्देश्य से निर्धारित होता है, इसलिए ब्राह्मण स्वयं आनन्द है।[10] रामानुज ने स्पष्ट रूप से कहा है कि ब्राह्मण की प्रकृति का सैद्धांतिक ज्ञान मुक्ति प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं हौगा।[11] रामानुज के अनुसार जिस उपाय को नियोजित किया जाता है, वह भक्ति योग, या भक्ति या पूजा का अनुशासन है।[12]

विशिष्टाद्वैत दर्शन

रामानुजाचार्य के दर्शन में सत्ता या परमसत् के सम्बन्ध में तीन स्तर माने गये है–
ब्रह्म अर्थात ईश्वर, चित् अर्थात आत्म तत्व, और अचित अर्थात प्रकृति तत्व।
वस्तुतः से चित् अर्थात आत्म तत्व तथा अचित अर्थात प्रकृति तत्व ब्रह्म या ईश्वर से पृथक नहीं है बल्कि रूप से ही दो स्वरूप है एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं। वस्तुत यही रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्वान्त हैं।

- मध्यकालीन विभूति रामानुजाचार्य ने बौद्धिक आधार पर आदिशंकराचार्य के 'अद्वैववाद ' को कड़ी चुनौती दी तथा 'विशिष्टाद्वैत' का प्रतिपादन किया। इसमें तीन तत्वों यथा–ईश्वर (ब्रह्म),जीव (आत्मा) तथा प्रकृति को नित्य माना गया है।
- विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार, यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनों ब्रह्म से ही उद्भूत है और वे ब्रह्म से उसी प्रकार संबद्ध है, जैसे सूर्य से उसकी किरणें संबद्ध होती है। अतः ब्रह्म एक होने पर भी अनेक है।
- विशिष्टाद्वैत दर्शन के अंतर्गत आदिशंकराचार्य के मायावाद का खंडन किया गया है। शंकराचार्य ने 'जगत को माया' करार देते हुए इसे मिथ्या बताया है। लेकिन रामानुज के अनुसार, जगत का निर्माण भी ब्रह्म ने ही किया है, अतः यह मिथ्या नहीं हो सकता है। उनके अनुसार, माया का अर्थ ईश्वर की उद्भूत रचना–शक्ति से तथा अविद्या का अर्थ जीव की अज्ञानता से है। रामानुज ने शंकराचार्य के मायावाद का खंडन करने के लिये सप्त तर्क दिये है, जिन्हें 'सप्तानुपत्ति' कहा जाता है।
- रामानुज ' ज्ञान को द्रव्य'मानते है। तथा इसकी प्राप्ति के तीन साधन–प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द– बताते है। विशिष्टाद्वैत के ज्ञान विषयक विचारों में सबसे महत्वपूर्ण है–'सभी विज्ञान यथार्थ हैं।'

  रामानुज के अनुसार, ब्रह्म या ईश्वर एक सगुण तत्त्व है। आत्मा तथा ब्रह्म में कुछ विशिष्ट अंतर हैं। आत्मा अणु है तथा ब्रह्म विभु(सर्वव्यापी) हैं। आत्मा के विपरीत, ब्रह्मपूर्ण तथा अनंत है, आत्मा ब्रह्म का अंश तथा उसी पर निर्भर है। जिस प्रकार अंश कभी पूर्ण नहीं हो सकता, गुण कभी द्रव्य नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार आत्मा कभी ब्रह्म नहीं हो सकती है।
- विशिष्टाद्वैत दर्शन के अनुसार, जीवात्मा के तीन प्रकार– बद्व आत्मा, मुक्तात्मा तथा नित्यात्मा है। 'बद्ध आत्मा' से तात्पर्य भौतिक जगत में विद्यमान शरीर–बद्ध जीव से, 'मुक्तात्मा' का

तात्पर्य ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने से तथा 'नित्यात्मा' का तात्पर्य ईश्वर के साथ बैकुंठ में निरंतर उनकी भक्ति में लीन रहने से है। इनका पुनर्जन्म नहीं होता है।

- रामानुज के दर्शन में तीसरा तत्व 'प्रकृति' है, जो जड़ अथवा अचेतन है। यह ज्ञानरहित तथा विकारी द्रव्य है। प्रकृति रूपी बीज से तथा जीवात्माओं के पूर्व संचित कर्मो से ईश्वर संसार की रचना करता है। 'सत्व, रज तथा तम' प्रकृति के तीनों गुणों का मिश्रण होता है।
- रामानुज ने भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन बताया है, जो सभी के लिये सदैव सुलभ है। इनके अनुसार, मोक्ष की अवस्था में आत्मा का परमात्मा (ब्रह्म) में विलय नहीं होता है अपितु वह ब्रह्म के सदृश (ब्रह्म प्रकार) हो जाता है।

चतुःसम्प्रदाय 52 द्वारा–

श्री वैष्णव सम्प्रदाय में स्वामी श्रीरामानंदाचार्य जी द्वारा स्थापित धार्मिक परम्पराओं का पालन किया जाता है। श्री वैष्णव सम्प्रदाय को स्वामी श्री रामानन्दाचार्य ने नई पहचान प्रदान की। उसी के अनुसार चतुःसम्प्रदाय 52 द्वारा गोत्र प्रचलन में आए। इससे पूर्व शैव एवं वैष्णव मताावलंबियों के बीच अपनी–अपनी धार्मिक परम्पराओं को लेकर कई बार हिंसक विवाद भी हुए हैं। इस कड़े संघर्ष का व्यापक इतिहास रहा है। विद्वानों के अनुसार स्वामी श्री रामानंदाचार्य की दो प्रकार की शिष्य परम्पराएँ थी। भक्ति का प्रचार करने वाले भक्त–कवियों में एक के प्रतिनिधि संत श्री कबीरदास जी और दूसरी के संत श्री तुलसीदास हुए।

रामानंदी संप्रदाय

रामानंदी/बैरागी, जिन्हें रामावत (आईएएसअी रामावत) के नाम से भी जाना जाता है, हिन्दू धर्म के वैष्णव श्री संप्रदाय की एक शाखा है। रामानंद संप्रदाय वैष्णवों का सबसे बड़ा संप्रदाय है, वैष्णववाद के 52 द्वारों में से 36 द्वार रमानंदियों के पास है। वे मुख्य रूप से राम के साथ ही विष्णु की सीधे पूजा और उनके अन्य अवतारों पर भी जोर देते है। इस संप्रदाय के लोग गुजरात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में वैष्णव के रूप में जाने जाते है। 20वीं शताब्दी की शुरूआत में, इस संप्रदाय को राम के पुत्रों, कुश और लव के वंशज घोषित किया गया था। श्री (रामानुज) संप्रदाय के अंतर्गत **रामानंदी संप्रदाय** जिसके प्रवर्तक आचार्य श्रीरामानंदाचार्य हुए। श्रीरामानंदाचार्य जी ने सर्व धर्म समभाव की भावना को बल देते हुए कबीर, रहीम सभी वर्णो के व्यक्तियों को भक्ति का उपदेश दिया। रामानन्द सम्प्रदाय में गोस्वामी तुलसीदास हुए जिन्होने श्रीरामचरितमानस की रचना करके जनसामान्य तक भगवत महिमा को पहुँचाया। उनकी अन्य रचनाएँ – विनय पत्रिका, दोहावली, गीतावली, बरवै रामायण एक ज्योतिष ग्रन्थ रामाज्ञा प्रश्नावली की भी रचना की। मध्यकालीन वैष्णव आचार्य ने भक्ति के लिए सभी वर्ण और जाति के लिए मार्ग खोला, परन्तु रामानन्दाचार्य वर्ण व्यवस्था दो अलग–अलग परंपरा चलायी जय हरी वैष्णव धर्म के अंदर भक्ति का स्थान है। रामानंदी सम्प्रदाय, बैरागियों के चार सम्प्रदायों में अत्यन्त प्राचीन सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय को बैरागी सम्प्रदाय, रामावत सम्प्रदाय और श्री सम्प्रदाय भी कहते है। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त विशिष्टाद्वैत कहलाता हैं। काशी में स्थित पंचगंगा घाट पर रामानंदी सम्प्रदाय का प्राचीन मठ बताया जाता है। तीर्थ यात्रा करने के बाद रामानन्द जब घर आए और गुरूमठ पहुँचे तो उनके गुरू भाइयों ने उनके साथ भोजन करने में आपत्ति की। उनका अनुमान था कि रामानन्द ने तीर्थाटन में अवश्य ही खान–पान संबन्धी छूआछूत का कोई विचार नहीं किया होगा। राघवानन्द ने अपने शिष्यों का यह आग्रह देखकर एक नया संप्रदाय चलाने की सलाह दे दी। यहीं से रामानन्द संप्रदाय का जन्म हुआ।इन दृष्टियों से रामानंद संप्रदाय एवं रामानुज संप्रदाय में भेद है परन्तु दार्शनिक सिद्धांत की दृष्टि से दोनों ही संप्रदाय विशिष्टाद्वैत मत के पोषक हैं। दोनों ही ब्रह्म को चिदचिद्विशिष्ट माना[ै] और दोनों ही के मत से मोक्ष का उपाय परमोपास्य की 'प्रपत्ति' हैं।[13]

अयोध्या में रामानुज सम्प्रदाय के प्रमुख मंदिर–

अयोध्या की गोद में वैष्णव धर्म का लालन–पालन हुआ था। यहाँ के जनसेवी नरेशों एवं संतो ने धर्म से सम्बन्धित विविध पहलुओं पर चिन्तन किया था। इस दिशा में उन्होने धार्मिक संस्थाओ को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किया था।[14]

अतः इन महत्वपूर्ण प्रयासो को सकार करते हुए अयोध्या में विकसित वैष्णव धर्म के अन्तर्गत 'श्री' सम्प्रदाय या आधुनिक रामानुज सम्प्रदाय के प्रमुख मंदिरों ने सम्प्रदाय परम्परा को आगे बढ़ाने में अग्रणी है–

1.कौशलेश सदन – अयोध्या के मुख्य मार्ग पर पड़ने वाले टेड़ी बजार चौराहे से रामजन्मभूमि मंदिर के वीआईपी मार्ग पर 1किलोमीटर जाने पर दाहिने तरफ कैकेयी घाट के निकट एक भव्य मंदिर उपस्थित है। जिसके महंत श्रीमद् जगतगुरूवासुदेवाचार्य विद्याभाष्कर जी है।

2.अशर्फी भवन – अयोध्या के मुख्य मार्ग पर अयोध्या डाकखाने से मतगजेन्द्र स्थान से लगभग 500 मीटर कटरा पुलिस चौकी की तरफ जाने पर बाई ओर यह भव्य एवं सुन्दर मंदिर उपस्थित है। जिसके मं0 स्वामी श्री धराचार्यजी है।

3.उत्तर तोताद्रीमठ – अयोध्या के मुख्य मार्ग पर अयोध्या डाकखाने से मतगजेन्द्र चौराहे से लगभग 200 मीटर की दूरी पर बाई ओर यह मंदिर उपस्थित हैं। जिसके मं0 स्वामी श्री कमलाकान्ताचार्य जी है।

4.सुग्रीव किला – अयोध्या के मुख्य मार्ग पर वर्तमान में निर्माणाधीन जन्मभूमि के मुख्य मार्ग पर बिड़ला मंदिर के सामने अत्यधिक ऊंचाई पर सुग्रीव किला उपस्थित है। प्राचीन काल में इसे सुग्रीव टीला भी कहा जाता था, जो यह मंदिर पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है। जिसके मं0 स्वामी श्री विश्वप्रपन्नाचार्य जी हैं।

5.बैकुण्ठ मण्डप, नजर बाग – अयोध्या के मुख्य मार्ग पर राजसदन के सामने ही पड़ने वाले नजर बाग मुहल्ले में जामवन्त किला के बगल में स्थित है, जिसके मं0 स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्य जी द्वितीय है।

6.राजसभा मंदिर – अयोध्या धाम के नजर बाग मुहल्ले मे बैकुंठ मण्डप मंदिर के निकट स्थित है। जिसके मं0 स्वामी योगेन्द्राचार्य जी महाराज जी है।

7.तोताद्रिमठ, नेपाली मंदिर – यह मंदिर मतगजेन्द्र चौराहे से उत्तर दिशा से लगभग 600 मीटर की दूरी पर सप्तसागर के पास यह मंदिर उपस्थित हैं। वर्तमान में इस मंदिर का पुनः जीर्णोद्धार कराया गया हैं। जिसमें दक्षिण भारतीय शैली की अनुपम झलक देखने को मिलती हैं। वर्तमान मं0 स्वामी श्री बालकृष्णाचार्यजी है।

8.बड़ी यज्ञ वेदी– अयोध्या धाम के विद्याकुण्ड चौराहे से बाई तरफ चलने पर (लगभग 200 मी0) दाहिनी तरफ यह मंदिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में विद्यमान है। अग्निकुण्ड के बगल में ही यह मंदिर स्थित है, जिसके मं0 स्वामी श्री रामजी अचारी जी है।

9.छोटी यज्ञ वेदी – छोटी यज्ञ वेदी विद्याकुण्ड पर बड़ी यज्ञ वेदी के निकट ही भव्य सुन्दर मंदिर है जो कि देखने में अति रमणीय हैं। इसके मं0 स्वामी श्री अमित पाण्डेय जी है।

10.अम्मा जी का मंदिर, गोला घाट – यह मंदिर अयोध्या के प्रमुख निर्मोचन घाट पर स्थित है। वर्तमान में इसका जीर्णोद्धार कराया गया है। मंदिर में ताँबे का ही विशाल स्तम्ब स्थापित किया गया हैं, जिसका उद्घाटन हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किया गया है। इसके मं0 स्वामी श्री जीयर स्वामीजी है।

11.दन्तधावन कुण्ड – अयोध्या फैजाबाद के मुख्य मार्ग पर हनुमान गढ़ी चौराहे से दाहिनी तरफ लगभग 300 मीटर की दूरी पर स्थित है, जिसके मं0 श्री विवेक आचारी जी है।

12.अयोध्या नाथ का मंदिर, कटरा – अयोध्या धाम में यह मंदिर अशर्फी भवन चौराहे से पश्चिम दिशा की ओर 50 मीटर पर बाई ओर स्थित है। इसके मं0 श्री भरत प्रपन्नाचार्य जी है।

13.श्रीरामलला सदनम – वर्तमान में यह नव्य मंदिर दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली का बना सबसे आधुनिक मंदिर है जो कि श्रीराम जन्मभूमि के निकट ही स्थित है। इसका उद्घाटन 2022 में उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किया गया है। जिसके वर्तमान मं0 स्वामी श्री जगतगुरू राघवाचार्य जी है।

14.विजय राघव मंदिर – अयोध्या धाम के मतगजेन्द्र चौराहे पर स्थित है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित सनातन आश्रम है, जहां पर वेद/उपनिषद की शिक्षा प्राचीन काल की भाँति ही एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर शिष्यों को दी जाती है। यहां आज भी वैदिक गुरूकुल की ही तरह ''वैदिक पद्धति'' के साथ शिक्षा दी जा रही है। इस मंदिर में आज भी रसोई का कार्य कुँए के जल से नित्य भर कर किया जाता हैं, मंदिर के गर्भगृह मे विद्युत का प्रवेश निषिद्ध है और प्रकाश के लिए लालटेन का उपयोग किया जाता है। जिसके वर्तमान मं0 स्वामी श्रीधररामानुज श्री वैष्णवदास (श्री धराचार्यजी) जी है।

15.सीता कान्त सदन – अयोध्या धाम के गोलाघाट चौराहे के निकट स्थित हैं। जिसके मं0 स्वामी रामानुजाचार्य जी है।

संदर्भग्रन्थ –

1."शाक्त"– शक्ति या दुर्गा के उपासक या जिस सम्प्रदाय की इष्ट देवता शक्ति है वह शाक्त कहलाता हैं। हिन्दू धर्म कोष–सम्पादित डॉ0 राजबली पाण्डेय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 1988, पृष्ठ 622

2."स्मार्त"–जो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं। हिन्दू धर्म कोष–सम्पादित डॉ0 राजबली पाण्डेय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 1988, पृष्ठ 692

3.गुरू–परंपरा––(श्लोक 001)....स्वा. कूरत्तालवार

4.https://web.archive.org/web/20191028203048/http://hindi.iskondesiretree.com/life-of-sri-ramanujacharya/

5.सम्प्रदाय मंथन

6.एन जगदीसन (1989) तमिल वैष्णववाद पर एकत्रित पत्र/ एनेस प्रकाशन/पी/82 उनका नाम ' रामानुज' (रामायण में लक्ष्मण का नाम) तमिल में 'इलैयालवार' रूप में किया गया था।

7."Ramanuja I Hindu theologian and philosopher I Britannica" www.britannica.com. Retriveved 20 November 2021

8.'' विशिष्टाद्वैत क्या हैं?–योगपीडिया से परिभाषा''। yogpedia.com. 20 नवंबर 2021 को लिया गया।

9.(तैत्तिरीय उपनिषद 11.61)

10.रामानुज। internetencyclopediaofphilosphy 20 नवंबर 2021 को लिया गया।

11.श्री रामानुज। रामानुज मेलकोट संस्करण के श्री भाष्य।

12.''रामानुज। दर्शनशास्त्र का इंदरनेट विश्वकोश'' 20 नवंबर 2021 ।

13.रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी–साहित्य पर उसका प्रभाव, लेखक– बदरी नारायण श्रीवास्तव।

14.प्राचीन अयोध्या का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन –डॉ0 राम बिहारी उपाध्याय